बौद्ध केन्द्रों का अध्ययन मध्य गंगा घाटी के सन्दर्भ में

पवन कुमार, शोधार्थी
ए.आई.एच. विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

भूमिका

बुद्ध के जीवन और बौद्ध धर्म से संबंधित स्थल, देश के विभिन्न भागों में विद्यमान हैं। प्रसिद्ध बौद्ध स्थलों में सारनाथ, बोध गया, कुशीनगर, नालन्दा, श्रावस्ती आदि की गणना की जाती है। किन्तु इनके अतिरिक्त अनगिनत ऐसे स्थल हैं जिनके विषय में हम अनभिज्ञ अथवा हमारा ज्ञान अत्यल्प है। नवीन पुरातात्विक सर्वेक्षणों एवं उत्खन्नों के फलस्वरूप बौद्ध धर्म से संबंधित स्थल प्रतिदिन प्रकाश में आ रहे हैं। इनके विषय में यत्र–तत्र प्रकाशित पुरातात्विक रिपोर्टों और शोध–पत्रिकाओं में छपे कुछ लेखों से ही पता चल पाता है। आवश्यकता इस बात की है कि पाठको के लिए भारत में स्थित इन बौद्ध स्थलों की जानकारी एक स्थान पर उपलब्ध हो।

अतः प्रस्तुत पेपर 'बौद्ध केन्द्रों का अध्ययन मध्य गंगा घाटी के संदर्भ' में बौद्ध साहित्य तथा पुरातात्विक अन्वेषणों के आधार पर बौद्ध स्थलों के बारे में लिखने की योजना की है।

गंगा नदी भारत की ही नहीं बल्कि विश्व की पवित्रतम नदियों में से एक है। गंगा नदी से सिंचित एवं प्रभावित क्षेत्र को विद्वानों ने 'गंगा घाटी' की संज्ञा दी है। गंगा घाटी का क्षेत्र भारत का महत्वपूर्ण प्राकृतिक क्षेत्र है। प्राचीनतम समय से ही मानव समूह ने गंगा घाटी को अपना आश्रय स्थल बनाया है।[1] मध्य गंगा घाटी का विस्तार 24°30` उत्तरी अक्षांश से 27°50` उत्तरी अक्षांश और 81°47` पूर्वी देशान्तर से 87°50` पूर्वी देशान्तर तक है। लगभग 1,44,409 वर्ग किलोमीटर तक इसका विस्तार है। इस क्षेत्र की लम्बाई लगभग 600 किलोमीटर पूर्व से पश्चिम एवं 330 किलोमीटर उत्तर से दक्षिण इसकी चौड़ाई है।[2]

मध्य गंगा घाटी ही शाक्य धर्म की जन्मस्थली रही है। शताब्दियों तक बौद्ध धर्म यहीं समृद्ध रहा तथा यहाँ से देशान्तर में प्रचारित हुआ। जिस समय भारत के अन्य भागों में बौद्ध धर्म की ज्योति धूमिल पड़ रही थी। उस समय मध्य गंगाघाटी के बौद्ध केन्द्रों ने सफलता पूर्वक बौद्ध संस्कृति का वहन किया। इस धर्म को एक अन्तर्राष्ट्रीय धर्म की छवि प्रदान की। दिड़नाम, धर्मकीर्ति, शीलभद्र, शान्तिरक्षित, कमलशील, दीपकर श्रीज्ञान, अभ्यांकर गुप्त आदि बौद्ध आचार्य इसी क्षेत्र से संबंधित थे। इन्होंने बौद्ध दर्शन के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। इस वर्ग के शासन वर्ग में भी बौद्ध धर्म के प्रति बहुत उत्साह था। जिसके फलस्वरूप बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण मिलता रहा। बौद्ध धर्म के उत्तरकालीन सम्प्रदायों का विकास भी इसी क्षेत्र में हुआ।[3] मध्य गंगा घाटी के बौद्ध केन्द्रों में मुख्यतः चम्पा, कुशीनगर,

वाराणसी, कौशाम्बी, श्रावस्ती, मथुरा एंव कन्नौज हैं। जिन्होंने छठी शताब्दी ईसा पूर्व में द्वितीय नगरीकरण में भी मुख्य योगदान दिया था।[4]

चम्पा (25°14` उत्तरी अक्षांश; 86°57` पूर्वी देशान्तर)

यह बौद्ध केन्द्र[4] बिहार के भागलपुर जिले में अवस्थित है।[5] यह महाजनपद काल में अंग की राजधानी थी। अंग का उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।[6] पालि त्रिपिटक में अंग देश के चार मुख्य नगरों चम्पा, भद्दिम, अस्सपुर और आपन का नाम मिलता है।[7] महापरिनिब्बानसुत्त से इस नगर का उल्लेख हुआ है। बुद्ध के जीवनकालीन भारत के छः प्रसिद्ध नगरों का इस सुत्त में उल्लेख हुआ है।[8] महात्मा बुद्ध चम्पा में कई बार आ चुके थे। वे यहाँ गग्गरा पोखरणी के तट पर निवास करते थे। जिसका उल्लेख अंगुत्तर–निकाय में मिलता है।[9] महात्मा बुद्ध के काल में इस नगर में कुछ अन्य आचार्यों ने भी अपने मतों का प्रचार किया था। इनमें पुरण–कस्यप, मौख्खलि गौसाल, अजित के सक्बलिन, पकुघकच्चायन, संजयबेलय्ठिपुत्र तथा निगन्धनाथपुत्त के नाम उल्लेखनयी है।[10] वाणिज्य व्यापार के लिए इस नगर की महत्ता थी। यहाँ के व्यापारी व्यापार के लिए सुवर्णभूमि तक जाया करते थे। मल्लसेकर के अनुसार चम्पा के ही नागरिकों ने इण्डोचीन में इस नाम के उपनिवेशों की स्थापना की थी।[11] चम्पा का चीनी यात्री फाह्यान ने भ्रमण किया। वह लिखता है कि यह नगर पाटलिपुत्र से 18 योजन की दूरी पर पूर्व दिशा में स्थित था।[12] यह नगर गंगा के दक्षिणी तट पर बसा हुआ था। उसके आगमन के समय इस नगर की विनासोन्मुखी प्रकृतिया आरम्भ हो गई थी।[13] उसने यहाँ पर स्तूपों एवं विहारों के होने का उल्ल्ेख किया है। फाह्यान के आगमन के समय इन स्थानों पर बौद्ध–भिक्षु निवास करते थे। फाह्यान की यात्रा के लगभग दो सौ पच्चीस वर्षों बाद चम्पा प्रदेश में पहुंचा चीनी यात्री के अनुसार यहाँ कई संघराम थे, जो अधिकांशतः नष्टप्राय थे। मठ गिर चुके थे और उनके खण्डहरों में लगभग 200 हीनयान मतावलम्बी भिक्षु निवास करते थे।[14]

कुशीनगर (26°73` उत्तरी अक्षांश; 83°88` पूर्वी देशान्तर)

कुशीनगर प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों में से एक था। इसकी महत्ता गौत्तम बुद्ध की निर्वाणभूमि एवं मल्ल की राजधानी के रूप में की जा सकती है।15 बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार इस बुद्ध ने परिनिर्वाण के लिए इसी नगर को चुना था, जिसकी गणना चार तीर्थ स्थानों में की जाती है। कुशीनगर को कुशीनगरी, कुशानगरा, कुशी ग्रामका, कुशीनारा आदि नामों से संबोधित किया गया है। चीनी यात्री फाह्यान पिप्पलिवन के गोरियों के अंगार स्तूप के पूर्व 12 योजन की दूरी पर स्थित बताया है। और वैशाली से कुशीनगर की दूरी 25 योजन बतायी है।[17] ह्वेसांग ने कुशीनगर को राम ग्राम से 150 मील की दूरी पर पूर्व दिशा में बताया है। ह्वेसांग ने नगर की परिधि 2 मील के लगभग बतायी है।[18] नगर के उत्तर

हिरण्यवती नदी के दूसरे तट पर गौतम बुद्ध का अत्येष्टि संस्कार किया गया था। वहाँ पर भी एक स्तूप बना हुआ था। महापरिनिर्वाण सुत्त में इसे 'मुकुट बन्धन' कहा गया है। इस स्तूप का यह नाम इसलिए पड़ा था कि यहाँ मल्ल नरेशों का अभिषेक किया जाता था और इस अवसर पर उनके सिर पर मुकुट बांधा जाता था। इसकी पहचान रामाभार तालाब के पश्चिमी तट पर स्थित एक विशाल स्तूप के खण्डहर से की जाती है। जो माथाकुँवरकोट से 1 मील की दूरी पर स्थित है। इस स्थान की मिट्टी पवित्र मानी जाती है। जिस स्थान पर बुद्ध की अस्थियों का बंटवारा भारत वर्ष के आठ नरेशों के बीच हुआ था, वहाँ अशोक निर्मित एक स्तूप था। इसके पास एक पत्थर की लाट थी जिस पर एक लेख खुदा हुआ था। इस पर भी बुद्ध के परिनिर्वाण की परिस्थितियों का उल्लेख किया गया था।[18]

वाराणसी (25º31` उत्तरी आक्षांश; 82º97` पूर्वी देशान्तर)

भारतीय संस्कृति का प्रसिद्ध केन्द्र वाराणासी अनेक संस्कृतियों का संगम रहा है। वाराणासी नगर की ख्याति राजधानी के रूप में बुद्ध पूर्व युग में ही स्थापित हो चुकी थी। इसकी प्राचीनता की तुलना विश्व के प्राचीनतम नगरों जेरूसलम, एथेंस तथा पीकिंग से ही जाती है।[19] सुविदित है कि 'वाराणसी' शब्द 'वरूणा' और 'अस्सी' दो नदी वाचक शब्दों के योग से बना है। पौराणिक अनुश्रुतियों के अनुसार वरूणा और असि नाम की नदियों के बीच में बसने के कारण ही इस नगर का नाम वाराणसी पड़ा। पद्मपुराण के उल्लेख अनुसार दक्षिणोत्तर में 'बसा' और पूर्व में 'असि' की सीमा से घिरे होने के कारण इस नगर का नाम वाराणसी पड़ा।[20] अथर्ववेद[21] में वाराणसी नदी का उल्लेख है। यह नगर विस्तृत, समृद्ध और जनाकीर्ण केन्द्र था।[22] महापरि निब्बानसुत[23] में तत्कालीन छहः प्रसिद्ध नगरों में वाराणसी का उल्लेख किया गया है। बौद्ध साहित्य से पता चलता है कि बुद्ध इस नगर में ठहरे थे। ऋषिपत्तन मृगदाव (आधुनिक सारनाथ) का भी उल्लेख बौद्ध साहित्य में आया है। जातकों में इसे मिगीचीर कहा गया है।[24] बौद्ध–गया में ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात बुद्ध ने अपना पहला उपदेश ऋषिपत्तन मृगदाव में ही दिया था। इस स्थान का ऋषिपत्तन मृगदाव नाम सम्भवतः ऋषियों के वायु मार्ग से उतरने के कारण पड़ा था। इसलिए इसे ऋषिपत्तन भी कहा जाता था।[25] वाराणसी नगर वाणिज्य और व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र था। स्थल तथा जल मार्गों द्वारा यह नगर भारत के अन्य नगरो से जुड़ा हुआ था। काशी से एक मार्ग राजगृह को जाता था। काशी से वेरंजा जाने के लिए दो रास्ते थे – एक, सोरेय्य होकर, दूसरा प्रयाग में गंगापार करके। दूसरा मार्ग बनारस से वैशाली को चला जाता था।[26] फाह्यान ने अपने यात्रा वर्णन में वाराणसी का उल्लेख किया है। उसने नगर के उत्तर–पूर्व 10ली में ऋषियों के 'मृग–उद्यान' के पास विहारों को देखा था।[27] सातवीं शताब्दी में भारत आए चीनी यात्री ह्वेसांग वाराणसी पहुंचा। इसके अनुसार बनारस 667 मील की परिधि में विस्तृत था। नगर के पश्चिमी किनारे पर गंगा नदी बहती थी। यहाँ की

आबादी ज्यादा थी। यहाँ 30 संघाराम थे, जिनमे सम्पितिय निकाय के 3000 भिक्षु निवास करते थे। राजधानी के पूर्वोत्तर वरना नदी के पश्चिमी तट पर अशोक निर्मित 100 फुट ऊँचा स्तूप था। इसमें आठ भाग थे, जो एक ऊँची चार दीवारी से घिरे थे। इस विहार में सम्मलित निकाय के 2500 भिक्षु रहते थे। विहार के मध्य में कांसे की धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा में बुद्ध की एक प्रतिमा थी।[28]

सारनाथ (25°22` उत्तरी अक्षांश, 81°1` पूर्वी देशान्तर)

बौद्धों का अत्यन्त महत्वपूर्ण केन्द्र सारनाथ वाराणसी से लगभग 6.4 कि.मी. उत्तर में हैं। इसका प्राचीन नाम ऋषित्तनम था।[29] ऋषिपत्तन से तात्पर्य 'ऋषि' का 'पतन' से हैं; जिसका आशय है वह स्थान जहाँ किसी एक बुद्ध ने गौत्तम बुद्ध भावी संबोधित को जानकर निवार्ण प्राप्त किया था। मृर्गों के विचरण करने वाले स्थान के आधार पर इसका नाम मृगदान पड़ा, जिका वर्णन निग्रोधमृग जातक मे आया है। आधुनिक नाम 'सारनाथ' की उत्पति 'सारंगनाथ' (मृर्गों के नाथ) अर्थात् गौत्तम बुद्ध से हुई है। बुद्ध के प्रथम उपदेश से 300 वर्ष बाद तक सारनाथ का इतिहास अज्ञात है; उत्खनन में इस काल के कोई अवशेष नहीं प्राप्त हुआ है। सारनाथ की समृद्धि और बौद्ध धर्म का विकास सर्वप्रथम अशोक के शासन काल में दृष्टिगत होता है। उसने सारनाथ में धर्मराजिका स्तूप, धमेख स्तूप एवं सिंह स्तम्भ का निर्माण करवाया। अशोक के उत्तराधिकारियों के शासन–काल में पुनः सारनाथ अवनति की ओर अग्रसर होने लगा।[30]

कौशाम्बी (25°22` उत्तरी अक्षांश; 81°25` पूर्वी देशान्तर)

कौशाम्बी प्राचीन भारत का प्रमुख नगर था। यह वत्स जनपद की राजधानी थी। इसका वर्णन दीद्यनिकाय के महापरिनिब्बान–सुत्त[31] में मिलता है, जिसमें इसे बुद्धकाल के छहः नगरों में एक बताया है। इस नगर का सर्वप्रथम उल्लेख वैदिक साहित्य (शतपथ ब्राह्मण)[32] में मिलता है। पांचवी शताब्दी ई.पू. से प्रथम शदी ई. तक कौशाम्बी बौद्ध धर्म का एक मुख्य केन्द्र रहा। यही पर महात्मा बुद्ध को उनके शिष्य आनन्द ने महापरिनिब्बान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया था।[33] महात्मा बुद्ध ने अपना 9वाँ वर्षावास कौशाम्बी में बिताया था और यहीं से कुरू राष्ट्र जाकर उन्होंने अनेक व्याख्यान भी दिए थे। कौशाम्बी में भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के निवास करने की चर्चा मिलती है। बौद्ध ग्रन्थों में घोषिताराम, कुक्कुटाराम, पावारिकाम्बवन तथा बदरिकाराम आदि कौशाम्बी के प्रसिद्ध विहारो का उल्लेख है। ये विहार कौशाम्बी में निवास करने वाले तीन प्रसिद्ध सेठो घोषित, कुक्कुट और पावारिक द्वारा बनवाये गये थे।[34] और इन विहारों का नामाकरण भी इन्ही के नाम के आधार पर हुआ था। कौशाम्बी के उत्खनन से एक अभिलेख मिला है, जिसमें घोषितराम को कौशाम्बी की सीमा पर दक्षिण–पूर्वी कोने में स्थित बताया गया है। यह बुद्ध के निर्वाण के पश्चात् भी आनन्द का प्रिय आवास था।[35] यहाँ सारिपुत्र, महाकच्चायन और उपवाण के भी कई बार आने के उल्लेख मिलता है।[36] कौशाम्बी बौद्धयुगीन उत्तर भारत का सर्वप्रमुख व्यापारिक केन्द्र

भी था। दक्षिण–पश्चिम और उत्तर भारत का सर्वप्रमुख व्यापारिक केन्द्र भी था। दक्षिण–पश्चिम और उत्तर–पश्चिम से आने वाली सड़के कौशाम्बी में मिलती थी। गंगा के मैदान का दक्षिणी पथ इन्द्रप्रस्थ से मथुरा होता हुआ इलाहाबाद के समीप कौशाम्बी पहुंचता था और वहां से चुनार आता था। बौद्ध साहित्य से कौशाम्बी पर शासन करने वाले राजाओं की जानकारी मिलती है। बुद्ध के शासन काल में कौशाम्बी पर उदयन का शासन था। उदयन ने वैवाहिक संबंध स्थापित करके अपने राज्य की स्थिति सुदृढ़ की थी। उसने अवन्ती नरेश चण्ड प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता से विवाह किया।[38] चीनी यात्री ह्वेसांग भी कौशाम्बी आया था उसने अपने यात्रा वर्णन में दक्षिण–पूर्व स्थित घोषिताराम विहार का उल्लेख किया है। इसके मध्य में बुद्धदेव का एक विहार और एक स्तूप है जिसमें तथागत के नाखून और बाल संचित हैं।

श्रावस्ती (27º31` उतरी अक्षांश तथा 82º2` पूर्वी देशान्तर)

यह बौद्ध केन्द्र वर्तमान समय में पूर्वी उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जिले में स्थित है। छठी शताब्दी ई. पू. में यह कौशल राज्य की राजधानी थी। यह नगर महात्मा बुद्ध एवं महावीर के जीवन की घटनाओं से सम्बद्ध है। यहाँ का राजा प्रसेनजित था। यहाँ के पुरातात्विक अवशेष से दो विभिन्न इकाइयों – सहेत (स्तूप स्थल) एवं महेत (आवासीय स्थल) में सुरक्षित है। यह स्थल प्राचीन अचिरावती एवं वर्तमान राप्ती नदी के किनारे स्थित है। यहाँ पर महात्मा बुद्ध के शिष्य अनाथपिण्डक ने महात्मा बुद्ध के निवास हेतु एक बिहार का निर्माण कराया था, जो जेतवन विहार के नाम से प्रसिद्ध है। अशोक द्वारा जेतवन विहार के पूर्वी द्वार के समीप दो स्तम्भ स्थापित करवाये गये थे।[38] बुद्ध के समय कोशल जैस समृद्धशाली जनपद की राजधानी के साथ बौद्ध धर्म के प्रचार का प्रमुख केन्द्र भी था। बौद्ध धर्म के प्रचार की ओर संकेत करते हुए मिलिन्दपन्हों में भिक्षुओं की संख्या 5 करोड़ बतलायी गई है। जो निश्चित ही अतिरंजना है।[39] बुद्धघोष के अनुसार उस समय श्रावस्ती में 57 हजार परिवार निवास करते थे। इसी ग्रन्थ में यहाँ की जनसंख्या 18 करोड़ बतायी गयी है, जो स्पष्टतः अतिरंजित है।[40] महात्मा बुद्ध का श्रावस्ती से विशेष संबंध था। उल्लेख है कि उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम 25 वर्षों के वर्षा वास श्रावस्ती में ही बिताए थे। बुद्ध के जीवन–काल में श्रावस्ती के दक्षिण में स्थित जेतवन एवं पुष्बाराम दो मुख्य केन्द्र थे। इस नगर में निवास करने वाले अनाथपिण्ड़क नामक धनी श्रेष्ठि ने जेतवन को खरीदकर बौद्ध संघ को दान किया था।[41] पुब्बाराम का निर्माण धनिक सेठ मिगार (मृगधर) की पुत्र वधू विशाखा ने कराया था। यह नगर के पूर्वीद्वार के पास स्थित था।[42] सम्भवतः इसीलिए इसका नाम पूर्वाराम पड़ा। यह लकड़ी तथा पत्थर द्वारा निर्मित था, इसमें दो मंजिले थी।[43] इसके अतिरिक्त बौद्ध ग्रन्थों में मल्लिकाराम और तीर्थकाराम नामक दो अन्य आरामो का भी उल्लेख मिलता है।[44] गुप्त काल में आए चीनी यात्री फाहयान ने भी श्रावस्ती का वर्णन किया है वह बताते हैं कि नगर में अधिवासियों की संख्या कम है और बिखरे हुए हैं। उस समय यह सब मिलकर केवल दो सौ परिवार ही रह गये थे। आगे लिखते हैं प्राचीन समय में इस नगर में

राजा प्रसेनजित शासन करते थे।[45] 7वीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेसांग ने भी श्रावस्ती का वर्णन करते हुए कहा यह कि यहाँ कई सौ संघाराम थे, जिनमें अधिकाशतः विनिष्ट हो गए हैं। इसके अतिरिक्त 100 देव मन्दिर भी हैं, जिसमें असंख्या धर्मावलम्बी उपासना करते थे। ह्वेसांग के अनुसार राजधानी के पूर्व थोड़ी दूरी पर एक छोटा–सा स्तूप है जो प्रसेनजित द्वारा भगवान बुद्ध के लिए बनवाया गया था। इसके पार्श्व में एक अन्य स्तूप है। यह उसी स्थान पर बना है जहाँ अंगुलिमाल ने नास्तिकता का परित्याग कर बौद्धधर्म स्वीकार किया था।[46]

मथुरा (27°31` उत्तरी अक्षांश; 77°14` पूर्वी देशान्तर)

बुद्धकालीन 16 महाजनपदों में सूरसेन एक महाजनपद था, जिसकी राजधानी मथुरा थी। यमुना नदी तट पर स्थित यह नगर उत्तरापथ व्यापारिक मार्ग का एक प्रमुख व्यापारिक नगर था। यूनानी इतिहासकारों ने इसे 'मेथोरा' कहा है। चीनी यात्री ह्वेसांग ने इसे मो–तो–पुलो लिखा है।[47] बौद्ध साहित्य में सूरशेन जनपद और उसकी राजधानी का विस्तृत वर्णन मिलता है। मिलिन्दपन्हों[48] में इसका उल्लेख भारत के प्रसिद्ध स्थानों में हुआ है। अंगुत्तरनिकाय के पंचकनिपात में मथुरा में पांच दोषों का उल्लेख किया गया है। यहाँ की सड़कें विषम, धूलयुक्त, भयंकर कुत्तो तथा राक्षसों से युक्त थी तथा यहाँ भिक्षा भी सुलभ नहीं थी। परन्तु, परवर्ती ग्रन्थों में मथुरा के इन दोषों का संकेत नहीं मिलता अतः कहा जा सकता है यह नगर बाद में उपर्युक्त दोषों से मुक्त हो चुका था। मथुरा का बौद्ध धर्म के साथ घनिष्ठ संबंध था। भगवान बुद्ध के जीवन–काल से ही इस संबंध का प्रारम्भ हो गया था, जो कुषाण काल तक अक्षुण रहा। अंगुतरनिकाय के अनुसार भगवान बुद्ध एक बार मथुरा गये थे और वहाँ उन्होंने उपदेश भी दिया था।[49] इस निकाय के वेरंजक–ब्राह्मण–सुत्त में भगवान बुद्ध द्वारा मथुरा से वेरंजा के मध्य यात्रा किये जाने का भी उल्लेख है।[50] मथुरा का देश के अन्य भागों से व्यापारिक संबंध भी था। यह उत्तरापथ और दक्षिणापथ दोनों भागों से जुड़ा हुआ था।[51] राजगृह से तक्षशिला वाले व्यापाकिर मार्ग के मध्य यह नगर था। मथुरा से एक मार्ग वेरंजा, सोरेय्य, कन्नौज होते हुए बनारस पहुंचता था। श्रावस्ती और मथुरा एक सड़क मार्ग द्वारा सम्बद्ध थे। इस नगर के व्यापारी पाटलिपुत्र से जलमार्ग से व्यापारिक वस्तुओं का आदान–प्रदान करते थे।[52] चीनी यात्री फाह्यान की यात्रा के दौरान मथुरा नगर में बौद्ध धर्म अपने विकास की पराकाष्ठा पर था। उसने लिखा है कि यहां 20 से भी अधिक संघाराम थे, जिनमें तीन हजार से भी अधिक भिक्षु निवास करते थे।[53] 7वीं शताब्दी में आए चीनी यात्री ह्वेसांग के अनुसार मथुरा का विस्तार लगभग 5000 ली और नगर की परिधि लगभग 20 ली थी। ह्वेसांग के अनुसार मथुरा में 20 से अधिक संघाराम थे। जिनसे 2000 भिक्षु निवास करते थे। इसके अतिरिक्त यहां पांच देव मन्दिर भी थे, जिनमें सभी धर्मों के साधु पूजा करते थे। तथागत के साथियों के पवित्र अवशेषों पर भी स्मारक रूप में कई स्तूप बने हुए थे। ह्वेसांग ने लिखा है कि नगर के एक मील पूर्व उपगुप्त द्वारा निर्मित एक संघाराम

था। इसके भीतर एक स्तूप था जिसमें तथागत के नाखून रखे थे। संघाराम के उत्तर में 20 फुट ऊँची और 30 फुट चौड़ी एक गुफा थी। उपगुप्त द्वारा निर्मित संघाराम को ग्राउस ने कंकाली टीले पर स्थित माना है।[54]

अयोध्या (26°48` उत्तरी अक्षांश; 82°13` पूर्वी देशान्तर)

अयोध्या भारत का बहुत ही प्राचीन नगर है। पालि ग्रन्थों में अयोध्या के लिए 'अयोज्झा' और अयुज्झ नाम आये है। गौतम बुद्ध का इस नगर के साथ विशेष संबंध था। चीनी यात्री ह्वेसांग के अनुसार बुद्ध धर्म प्रचार के संबंध में अनेक बार अयोध्या आये थे और मानव जीवन की निस्सारता तथा क्षणभंगुरता पर प्रभावकारी व्याख्यान दिया था।[55] ह्वेसांग ने 7वीं शताब्दी में अयोध्या की यात्रा की थी। उसके समय में अयोध्या का क्षेत्रफल 5000 ली और राजधानी का क्षेत्रफल 20 ली था। यहाँ 100 संघाराम थे, जिनमें महायान एवं हीनयांन के 3000 भिक्षु निवास करते थे। यहां 10 देव मन्दिर भी थे। अयोध्या में बुद्ध ने देव समाज के तीन मास तक धर्मोपदेश दिया था। ह्वेसांग ने यह भी उल्लेख किया है कि वसुबन्धु संघाराम से पश्चिम 4–5 ली दूर एक स्तूप में बुद्ध की अस्थियां विद्यमान थी। अयोध्या नगर के दक्षिण–पश्चिम आम्रवाटिका में एक पुराना संघाराम था, जहां असंख्य बोधिसत्व ने विद्याध्ययन किया था। ह्वेसांग के अनुसार असंग ने यहां योगाचार शास्त्र सूत्रालंकार टीका की रचना की थी। असंग की मृत्यु के बाद वसुबन्धु ने यहां कई ग्रन्थों की रचना की वसुबन्धु की मृत्यु अयोध्या में ही हुई थी।[56]

कन्नौज (27°31` उत्तरी अक्षांश; 79°55` पूर्वी देशान्तर)

कन्नौज प्राचीन भारत का एक महत्वपूर्ण नगर है। इस नगर को कान्यकुब्ज भी कहा जाता था। रामायण के अनुसार इसकी नींव कुशनाभ ने डाली थी, जो कुश के पुत्र थे।[57] महाभारत के अनुसार विश्वामित्र यहाँ आये थे। भग्वत पुराण में भी इसका उल्लेख वर्णन अजामिल के नगर के रूप में किया गया है।[58] कन्नौज नगर बौद्धिक, व्यापारिक तथा धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण था। गंगा के मैदान के मध्य में स्थित होने कारण पूर्व में बंगाल और पश्चिम में पंजाब जाने वाले व्यापारिक मार्ग के केन्द्र के रूप में यह नगर प्रसिद्ध था।[59] चीनी यात्री फाह्यान लिखता है कि यह नगर (कि–जू–ई) गंगा के तट पर स्थित था। इसमें केवल दो संघाराम विद्यमान थे। जिसमें हीनयान मतावलम्बी रहते थे।[60] 7वीं शताब्दी में जब एक ओर चीनी यात्री ह्वेसांग कन्नौज आया था, यहां की सत्ता हर्षवर्धन के हाथ में थी।

चीनी यात्री ह्वेसांग ने अपने यात्रा वर्णन में कन्नौज के पश्चिमोत्तर में सम्राट अशोक द्वारा निर्मित स्तूप का उल्लेख किया है। सम्राट ने इस स्तूप को उस स्थान पर बनवाया था, जहाँ भगवान बुद्ध ने सात दिनों तक सद्धम्म पर व्याख्यान दिया था। यात्री ने इस स्तूप के पास ही चार पूर्व बुद्धो के पीठासन तथा चरणचिह्न भी देखे थे। वह लिखता है कन्नौज के दक्षिण–पूर्व में कुछ दूर गंगा के दक्षिणी

तट पर सम्राट अशोक का बनवाया गया 200 फीट ऊँचा विशाल स्तूप है। इसे मौर्य सम्राट ने उस स्थान पर स्मारक रूप में बनवाया था जिस स्थान पर भगवान गौत्तम बुद्ध ने छहः महीने तक धर्मोंपदेश दिया था। विशाल स्तूप के पास ही चीनी यात्री ने उस छोटे स्तूप को भी देखा था जिसमें तथागत के केश और नख धातु रखे गये थे। यह धातु–स्तूप लोगों द्वारा बड़ा पूज्य स्तूप माना गया था।

कन्नौज नगर में ह्वेसांग ने एक अन्य बौद्ध स्मारक का भी उल्लेख किया है। यह नगर के दक्षिण में गंगा के किनारे एक प्राचीर से आवृत तीन संघाराम थे जिनमें जाने के लिए अलग–अलग फाटक थे। विहारों में भगवान बुद्ध की सुसज्जित मूर्तियाँ स्थापित थीं। विहार के भीतर एक डिब्बे में भगवान बुद्ध के दन्त धातु सुरक्षित थे।[61]

निष्कर्ष :

मध्य–गंगा घाटी का क्षेत्र भारत का एक विशाल और महत्वपूर्ण क्षेत्र है। सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध इस भू–भाग को बौद्ध साहित्य में मध्य देश कहा गया है। मैदानी नदियों के प्रवाह ने इस क्षेत्र को ऊपजाऊ और समतल बना दिया है। उपजाऊ भूमि और नदियाँ नगरों की जन्मदायिनी मानी जाती है। इसलिए क्षेत्र के बौद्ध नगर प्रायः नदियों के किनारे स्थित है। मथुरा, इलाहाबाद, कन्नौज, कौशाम्बी, वाराणसी, अयोध्या आदि सभी नदियों के ही किनारे से हुए हे। गौत्तम बुद्ध गंगा घाटी के क्षेत्र में पदचारिका करके लोगों को हित सुखकारी उपदेश देते रहे। उनके जीवन से संबंधित स्थान ही बाद में बौद्ध केन्द्र बन गये। उनके श्रद्धालु अनुयायियों ने उन्हीं स्थानों पर स्मृति स्वरूप स्मारक–स्तूप, विहार, चैत्य तथा स्मत्भ और मूर्तियां स्थापित की। गौत्तम बुद्ध के पश्चात् उनके शिष्य भिक्षुओं की स्मृति में भी स्मारक बनवाये गये।

सन्दर्भ

1. डॉ. पुष्प लता सिंह, विन्ध्य–मध्यगांगेय क्षेत्र का पुरातत्त्व, स्वाति पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2011
2. आर.एल.सिंह, इंडिया : ए रिजनल ज्योग्राफी, नेशनल ज्योग्राफीकल सोशायटी ऑफ इण्डिया, वाराणसी, 1992
3. पुष्प लता सिंह, उपरोक्त, पृ. 310
4. प्रवेश कुमार, श्रीवास्तव, गुप्त–कालीन नगर एवं व्यापार, वीर–बहादुरसिंह पूर्वांचल, विश्वविद्यालय, जौनपुर, 2002
5. पुष्प लता सिंह, उपरोक्त, पृ. 61
6. प्रवेश कुमार, श्रीवास्तव, उपरोक्त, पृ. 192

7. उदय नारायण राय, प्राचीन भारत में नगर एवं नगर जीवन, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1965
8. उदय नारायण राय, उपरोक्त, पृ. 178
9. राहुल सांकृत्यायन, मज्झिम निकाय (हिन्दी अनुवाद), महाबोधि सभा, सारनाथ, 1956
10. उपरोक्त, पृ. 70
11. जी.पी. मल्लसेकर, डिक्शनरी ऑफ पालि प्रापर नेम्स, भाग–2
12. जेम्स लेग्गे, दि ट्रेवेसल्स ऑफ फाहियान, पुर्नमुद्रित ओरियण्टल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1971
13. उदय नारायण राय, उपरोक्त, पृ. 179
14. थामस वाटर्स, आन युवान–च्वांग्स ट्रेवेल इन इण्डिया, एशियाटिक सोसायटी लन्दन, 1904–05
15. ॲगने लाल, उत्तर प्रदेश के बौद्ध केन्द्र, लखनऊ, 2006
16. उपरोक्त, पृ. 115
17. वाटर्स टी. आन, युवान–च्वाग्स ट्रेवेल्स इन इण्डिया, भाग–1
18. विजय कुमार श्रीवास्तव, चीनी वृत्तान्तों पर आधारित प्राचीन भारत का सांस्कृतिक अध्ययन, वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, 2002
19. डायना एल. इक, बनारस सिटि ऑफ लाइट, प्रथम संस्करण, न्यूर्याक, 1982
20. विदुला जायसवाल, आदिकाशी से वाराणसी तक, आर्यन बुक्स इन्टरनेशनल, नई दिल्ली, 2011
21. अथर्ववेद, 4/7/1
22. शेरिंग, दि सेक्रेड़ सीटी ऑफ बनारस
23. मोतीचन्द्र, काशी का इतिहास, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकार, प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई, प्रथम संस्करण, 1962
24. जेम्स लेग्गे, ट्रेवेल्स ऑफ फाह्यान, पृ. 24
25. विदुला जायसवाल, उपरोक्त, पृ. 103
26. मोतीचन्द्र, उपरोक्त, पृ.
27. विजय कुमार श्रीवास्तव, उपरोक्त, पृ. 247
28. थामस वाटर्स, उपरोक्त, पृ. 48
29. प्रियसेन सिंह, भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल, दिल्ली, 2016
30. उपरोक्त, पृ. 17
31. दीघनिकाय, द्वितीय खण्ड
32. शतपथ ब्राह्मण, 12/2/13
33. नगेन्द्रनाथ घोष, अर्ली ऑफ कौशाम्बी, इलाहाबाद, 1935
34. प्रियसेन, उपरोक्त, पृ. 191

35. रीज डेविड्स, बुद्धिस्ट इण्डिया, कलकत्ता, 1950
36. नगेन्द्रनाथ घोष, उपरोक्त, पृ. 50
37. विजय कुमार, श्रीवास्तव, उपरोक्त, पृ. 240
38. पुष्प लता सिंह, उपरोक्त, पृ. 42
39. मिलिन्दन्हो, पृ. 349
40. भरत सिंह उपाध्याय, बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन, 2018
41. उदय नारायण राय, उपरोक्त, पृ. 118
42. प्रियसेन, उपरोक्त, पृ. 55–56
43. उपरोक्त, पृ. 57
44. उपरोक्त, पृ. 57–58
45. जेम्स लेग्गे, उपरोक्त, पृ. 59
46. सेमुउल बील, चाइनीज एकाउण्ट्स ऑफ इण्डिया, कलकत्ता, 1958
47. अँगले लाल, उपरोक्त, पृ. 26
48. मिलिन्दपन्हो, पृ. 331
49. भरत सिंह उपाध्याय, उपरोक्त, पृ. 109
50. उपरोक्त, पृ. 110
51. मोतीचन्द्र, सार्थवाह, 4
52. जेम्स लेग्गे, उपरोक्त, पृ. 102
53. विजय कुमार श्रीवास्तव, उपरोक्त, पृ. 239
54. ग्राउस, मथुरा डिस्ट्रिक्ट मेमायर, संस्करण–3, 1883
55. विजय कुमार श्रीवास्तव, उपरोक्त, पृ. 239
56. विजय कुमार श्रीवास्तव, उपरोक्त, पृ. 240
57. सन्तोष कुमार सिंह, उतर भारत में नगरों का विकास, दिल्ली, 2004
58. रामानन्द यादव, उत्तर प्रदेश के प्राचीन नगर, राजबहादुर स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, गुलालपुर, जौनपुर, 2005
59. रामाशंकर त्रिपाठी, हिस्ट्री ऑफ कन्नौज
60. जेम्स लेग्गे, उपरोक्त, पृ. 541
61. अँगले लाल, उपरोक्त, पृ. 77